ISSN : 2229-5550

नाट्यम्

89-90, अप्रैल-सितम्बर 2019

रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका

विशाखदत्त विशेषाङ्क

प्रधान संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक
सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल
नौनिहाल गौतम
रामहेत गौतम
शशिकुमार सिंह
किरण आर्या

प्रकाशक
नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Scanned with CamScanner

नाट्यम्
89-90, अप्रैल-सितम्बर 2019
रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका
ISSN : 2229-5550
UGC Approved Journal Sr. No. 41002
नाट्य परिषद् (पंजीकरण क्र. 100066)
संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics
published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit,
Doctor Harisingh Gour University, Sagar,
Madhya Pradesh-Pin-470 003. India.
Phone-Fax (off.) : 07582-264366

सदस्यता शुल्क :
प्रत्येक अंक - 25/- रु., वार्षिक - 100/- रु.
आजीवन (प्रति व्यक्ति) - 1000/- रु.
आजीवन (प्रति संस्था) - 5000/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है
जो नाट्य परिषद्, सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com
© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रण : अजय जैन, **अमन प्रकाशन** नमक मंडी,
कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति के लिए *नाट्य परिषद्* से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से *नाट्य परिषद्*, संपादक या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सूचना - आजीवन ग्राहकों को डाक व्यय 250 रु. (दो सौ पचास रूपये मात्र) पर नाट्यम् के उपलब्ध पुराने अंक भी निःशुल्क देय हैं।

Scanned with CamScanner

15

मुद्राराक्षस का सूक्तिसौन्दर्य

नौनिहाल गौतम

साहित्य समाज का हितसाधक होता है। वह शिक्षा देता है कि राम आदि की तरह बर्ताव करना चाहिए, रावण आदि की तरह नहीं। उसका यह उपदेश किसी प्रिया की तरह सहज मानने योग्य होता है, थोपा गया नहीं होता। साहित्य में ये उपदेश कई रूपों में समाये रहते हैं। कहीं सम्पूर्ण ग्रन्थ ही उपदेशात्मक सूक्तिमय हैं जैसे- सदुक्तिकर्णामृत, सुभाषितरत्नभाण्डागार आदि। कहीं सम्पूर्ण ग्रन्थ से निष्कर्ष रूप में उपदेश प्राप्त होता है, जैसे रामायण का उपदेश है - 'रामादिवद्वर्तितव्यम् न रावणादिवत्'। कहीं ग्रन्थों में सूक्ति के रूप में सदुपदेश समाये रहते हैं। काव्यों में कथानक के साथ पिरोयी गयी सूक्तियाँ कथा में चमत्कार तो उत्पन्न करती ही हैं साथ ही गम्भीर अर्थ को व्यक्त करने वाली होती हैं। गम्भीर अर्थ को व्यक्त करने में भारवि के किरातार्जुनीयम् की सूक्तियाँ प्रसिद्ध हैं। संस्कृत नाटकों में भी सूक्तियों का प्रचुर प्रयोग मिलता है। संवादों में पिरोयी गयी सूक्तियाँ प्रसंगानुसार तो अर्थ देती ही हैं, सामान्य रूप से प्रयोग करने पर भी सहृदयों को आनन्द देने वाली होती हैं। इनसे नाटकीयता में भी वृद्धि होती है। कम शब्दों में अधिक अर्थ देने वाली सूक्तियाँ नाट्य में चमत्कार को बढ़ाने वाली होती हैं।

संस्कृत नाट्य परम्परा में महत्त्वपूर्ण नाटक है - महाकवि विशाखदत्त विरचित मुद्राराक्षसम्। यह नाटक सात अंकों में निबद्ध है। इसमें चाणक्य की प्रखर मेधा का निदर्शन मिलता है। चाणक्य की तीक्ष्ण बुद्धि से चली चालों में फँसकर राक्षस को चन्द्रगुप्त का अमात्य पद स्वीकार करना पड़ता है। सम्पूर्ण नाटक चाणक्य के बुद्धिवैभव के इर्द-गिर्द बुना गया है। नाटक के सुगठित कथानक में बीच बीच में महत्त्वपूर्ण सूक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। ये सूक्तियाँ कथानक के अलावा सामान्य रूप से प्रयोग करने पर भी प्रभावपूर्ण अर्थ देती हैं। इन सूक्तियों ने मुद्राराक्षस के सौन्दर्य को बढ़ाया है। ये सूक्तियाँ बोलने वाले पात्र के आधार पर भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं। जैसे चाणक्य के द्वारा कही गयी सूक्तियों में उद्धतता एवं दृढता है। यहाँ मुद्राराक्षस की सूक्तियों का विवेचन प्रस्तुत है।

मुद्राराक्षस की सूक्तियों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि अधिकतर सूक्तियाँ राजनीतिक प्रभाव को व्यक्त करने वाली हैं। मुद्राराक्षस नाटक में भाग्य, नीति, जाति, स्त्री, लोकोक्तियाँ, नौकरी/सेवा/कर्तव्य, स्वभाव/प्रवृत्ति, व्यवहार, संबंध, राज, राज्यश्री से संबंधित सूक्तियाँ हैं।

भाग्य- मुद्राराक्षस में दैव या भाग्य को लेकर दो विरोधी विचार दृष्टिगोचर होते हैं। एक ओर पुरुषार्थ पर विश्वास रखने वाले चाणक्य के विचार हैं जो भाग्य में विश्वास न करते हुए पुरुषार्थ या कर्म या बुद्धि पर विश्वास करते हैं। चाणक्य भाग्यवादियों को मूढ समझते हैं। द्रष्टव्य- 'दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति'[1]। दूसरी ओर राक्षस जैसे पात्र हैं जो घटने वाली घटनाओं के लिए भाग्य या दैव को ही कारण मानते हैं। द्रष्टव्य- 'दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा सर्वा विपर्यस्यति'[2], 'प्रारब्धम-परित्याज्यमेव'[3]। इस प्रकार भाग्यवादी तथा कर्मवादी, ये दोनों विचार यहाँ मिलते हैं। मनुष्यों की अनुकूल और प्रतिकूल अवस्थाओं के परिवर्तन विना किसी पूर्व सूचना के घटित हो जाते हैं। द्रश्टव्य-'अहो अलक्षितनिपाताः पुरुषाणां समविषमदशापरिणतयो भवन्ति'[4], भाग्य भावी की रक्षा करता है- 'भव्यं रक्षति भवितव्यता' (मुद्राराक्षसम् 2.21 के पूर्व)

कर्म-कर्म को फल का कारण मानने संबंधी विचार भी मुद्राराक्षस में विद्यमान हैं। भाग्यवादी राक्षस की उक्ति है कि कार्यों की गति चिरकाल से ब्रह्मा की भी आज्ञाकारिता को प्राप्त नहीं होती। द्रष्टव्य- 'कार्याणां गतयो विधेरपि न यान्त्याज्ञाकरत्वं चिरात्'[5]।

सूत्रधार का कथन है कि मूर्ख भी उपजाऊ भूमि पर बीज वपन करे तो खेती होती है। धान की सघनता बोने वाले के गुणों को नहीं देखती। यहाँ कर्म की अनिवार्यता या फलवत्ता निरूपित है। द्रष्टव्य- 'चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः। न शालेः स्तम्बकारिता वप्तुर्गुणमपेक्षते।।'[6]

नीति-प्रयोग की गयी नीति कालान्तर में फल प्रदान करने वाली होती है।

द्रष्टव्य -

Scanned with CamScanner